17 फरवरी 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वस्तु के सहज परिणमन का ध्यान आते ही सहज शांति उत्पन्न होती है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-34

वर्ष : 30, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ परमपूज्य गुरुदत्त भगवान की निर्वाण भूमि लघु सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 महावीरस्वामी दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दिनांक 5 से 11 फरवरी, 2008 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में अन्तर्राष्टीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन ग्रंथाधिराज समयसार की १९ वीं गाथा पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, दादा विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' के प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित संदीपजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम सेठ गुलाबचंदजी जैन, श्री राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। सभी कार्यक्रमों का कुशल संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया ।

महोत्सव में बालक वर्द्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती विमलादेवी-श्रीकोमलचन्दजी टडावालों को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी मस्तांई प्रमोद-निशा जैन घुवारा थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्रीदिलीपभाई-कमलाक्षी शाह मुम्बई थे। सम्पूर्ण महोत्सव यज्ञनायक श्री निहालचन्द-श्रीमती अचरजबाई जैन जयपुर के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

दिनांक 5 फरवरी को कार्यक्रम का शुभारंभ श्री महावीरप्रसादजी जैन फिरोजाबाद के कर कमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। सिंहद्वार का उद्घाटन श्रीमती वासंतीबेन मुम्बई, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री माणकलालजी ठाकुर्डिया उदयपुर, पंचकल्याणक विधान का उद्घाटन सेठ गुलाबचन्दजी जैन सागर, यागमण्डल विधान उद्घाटन श्री अशोककुमारजी जैन भोपाल एवं प्रतिष्ठामंच का उद्घाटन श्री सुधीरकुमारजी जैन कटनी ने किया।

रात्रि में इन्द्रसभा/राजसभा के अतिरिक्त ध्रुवधाम बांसवाड़ा एवं सिद्धायतन-द्रोणगिरि के छात्रों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया। महोत्सव को आकर्षक बनाने हेतु सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा एवं टोडरमल संगीत सरिता जयपुर ने प्रासंगिक गीतों का रसास्वादन कराया।

सिद्धायतन परिसर में निर्मित बीस तीर्थंकर जिनालय एवं स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री भबूतमल चम्पालाल रमेशजी भण्डारी परिवार बैंगलोर की ओर से श्री ब्रह्मदेवजी जैन बैंगलोर ने किया। समवशरण जिनालय का उद्घाटन श्री जैन बहादुर जैन परिवार कानपुर, मानस्तम्भ का उद्घाटन श्री मुकेशकुमारजी जैन देवलाली ने किया। इसके अतिरिक्त आत्मनिकेतन आश्रम, गुरुदत्त छात्रावास भवन, महासती चन्दनबाला भोजनालय एवं विश्रान्तिगृह का सुन्दर निर्माण हुआ।

विद्वत्सम्मान ह्न

महामहोत्सव के मध्य तप कल्याणक के अवसर पर दिनांक 9 फरवरी,08 को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष विद्वानों के सम्मान के क्रम में जैन दर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मैनेजर **पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर** का सम्मान किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने सम्मानमूर्ति का परिचय तथा पण्डित अभयकुमारजी देवलाली एवं श्री भागचन्दजी बड़ामलहरा ने उनके बारे में अपने विचार व्यक्त किये। आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं दस हजार रुपये की मानधन राशि से पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, दादा विमलचन्दजी झांझरी, पण्डित उत्तमचन्दजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी, श्री महीपालजी ज्ञायक, श्री बीनूभाई

(शेष पृष्ठ-8 पर...)

सम्पादकीय – कहानी

जान रहा हूँ, देख रहा हूँ

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

आषाढ मास की अष्टाह्निका का समय था, सिद्धचक्रपूजा विधान का वृहद् आयोजन चल रहा था। सारा समाज धार्मिक वातावरण के रंग में रंगा था। प्रात: पूजन–पाठ के बाद अध्यात्मरसिक, तार्किक विद्वान स्थानीय पण्डितजी के प्रवचनसार परमागम पर मार्मिक प्रवचन चल रहे थे।

प्रवचनों में पण्डितजी नाना तर्कों, युक्तियों और उदाहरणों से आत्मा के ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव को समझा रहे थे और स्वतंत्र स्व–संचालित वस्तु–व्यवस्था के आधार पर पर के कर्तृत्व का निषेध कर प्रत्येक प्रतिकूल–अनुकूल परिस्थिति में हर्ष–विषाद न करके ज्ञाता–दृष्टा रहने पर जोर दे रहे थे।

पण्डितजी ने अपने प्रभावी प्रवचन में यह भी बताया कि ह्न **''धर्म परिभाषा नहीं प्रयोग है''** अत: जो सिद्धान्त हमने यहाँ समझे–सुने हैं, उनका हमें अपने पारिवारिक, व्यापारिक और सामाजिक जीवन में प्रयोग भी करना चाहिए; क्योंकि घर–परिवार या व्यापार और समाज के क्षेत्र में ही ऐसे अनुकूल–प्रतिकूल प्रसंग बनते हैं, जहाँ हमारे तत्त्वज्ञान की परीक्षा होती है। यदि हम अपने कार्यक्षेत्र में इन सिद्धान्तों के प्रयोग में सफल हुए तो ही हमारा तत्त्वज्ञान सुनना सार्थक है, अन्यथा पल्ला झाड़ प्रवचन सुनने से कोई लाभ नहीं होगा।''

पण्डितजी ने पुन: गीतमय भाषा में कहाह्न

बस, जानन–देखन हारा, यह आत्मा हमारा।
जो जले नहीं अग्नि में, गले नहीं पानी में।।
सूखे न पवन के द्वारा यह आत्मा हमारा।।बस.।।

सभी श्रोता सिर हिला–हिलाकर और तालियाँ बजा–बजाकर पण्डितजी के कथन का हार्दिक समर्थन करते हुए ह्न अध्यात्म के रस में मग्न होकर झूम रहे थे। साथ ही स्वर में स्वर मिलाकर सब एकसाथ बोल रहे थे ह्न **''बस, जानन–देखन हारा, यह आत्मा हमारा।''**

अतिथिरूप में बाहर से पधारे एक वयोवृद्ध ब्रह्मचारी यह सब आध्यात्मिक वातावरण का नजारा देख रहे थे, पर उनके मुखमण्डल पर एक विचित्र प्रकार का भाव झलक रहा था। ऐसा लगता था कि संभवत: उन्हें यह सब पसन्द नहीं आ रहा है।

वे संभवतः यह सोच रहे थे कि ह्न ''यदि हम मात्र जानन–देखन हारे हैं तो यह हमारे काम–काज कौन कर जाता है ? 'कोई पर का कुछ कर ही नहीं सकता' ह्न ऐसे उपदेश से तो पुरुषार्थ का ही लोप हो जायेगा और सब स्वच्छन्दी हो जायेंगे।''

वे यही सब सोचते रहे; परन्तु उससमय उन्होंने कोई प्रतिक्रिया प्रगट नहीं की, चुपचाप उठकर चले गये और अपनी बात कहने के लिए अपने अनुयायी नजदीकी मित्रों से मिलकर मध्यान्ह में अपने प्रवचन का प्रोग्राम बनवाया।

ब्रह्मचारी के प्रवचन की सूचना से सब श्रोता प्रसन्न थे, सभी श्रोता समय पर आ भी गये। सबको यह आशा और अपेक्षा थी कि एक वयोवृद्ध आत्मसाधक ब्रह्मचारीजी के अनुभवों का हमें विशेष लाभ मिलेगा; परन्तु ब्रह्मचारीजी ने प्रात:कालीन **'जानन–देखन हारा'** के आध्यात्मिक वातावरण पर कटाक्ष करने के उद्देश्य से एक कहानी से अपना प्रवचन प्रारंभ किया।''

ब्रह्मचारीजी ने एक कहानी सुनाते हुए कहा ह्न ''एक अध्यात्मप्रेमी सेठ और उसकी पत्नी प्रतिदिन की भाँति रात्रि दस बजे अपने शयन कक्ष में चले गये। जब वे गहरी नींद में सो गये तब मध्य रात्रि के बाद उनके शयन कक्ष में एक चोर ने प्रवेश किया। यद्यपि चोर सावधानी से कदम रख रहा था, पर संयोग से उसका हाथ सेन्टर टेबल पर रखी घंटी पर पड़ गया। घंटी की आवाज से सेठानी की नींद खुल गई। आँखें खोल कर देखा तो नाइट बल्ब के मन्द–मन्द प्रकाश में एक व्यक्ति तिजोड़ी में चाबी मिलाते हुए दिखा।

सेठानी समझ गई, यह कोई चोर है। उसने पति को धीरे से जगाकर कहा ह्न ''देखो ! घर में चोर घुस आया और उसने तुम्हारी तकिया के नीचे से तिजोड़ी की चाबी भी निकाल ली है।

नींद तो सेठ की भी खुल गई थी, सेठ ने भी चोर को देख लिया था, पर वह अपने अध्यात्म का आलम्बन लेकर चुपचाप जानते–देखते रहे और उस सेठ ने पत्नी से धीरे से कहा ह्न **''मैं सब जान रहा हूँ, देख रहा हूँ।''**

चोर ने तिजोड़ी खोल ली, सारी धन–सम्पत्ति पोटली में बांध ली, अब जब वह कांख में दबाकर चल ही दिया तो पत्नी ने पुन: कहा ह्न **''कब तक जानते–देखते रहोगे,** कुछ करोगे नहीं ? देखो, वह माल लेकर चला...''

पति ने कहा ह्न ''तू शान्त रह ! मैं अपना काम कर रहा हूँ।''

इतने में तो चोर सब माल लेकर नौ–दो ग्यारह हो गया।

तब पत्नी चिल्लाकर बोली ह्न ''क्या खाक कर रहे हो ? जानना–देखना भी कोई काम है ? तुमने अपनी आँखों से देखते–देखते सब लुटा दिया। अरे ! वह अकेला था और अपन दो थे, क्या उसे पकड़ नहीं सकते थे ? पर तुम ऐसा क्यों करोगे ? ज्ञाता–दृष्टा रहने का पाठ जो पढ लिया

है।'' यह कहते हुए वह मन ही मन सोचती है कि ह्न ''इन्होने तो इसी तरह सभी श्रोताओं को भी कायर और निकम्मा बना दिया है।''

ब्रह्मचारीजी ने कहानी पूरी करते हुए कहा ह्न इसतरह पण्डित पति के प्रति रोष प्रगट करती हुई बेचारी पत्नी रोती रह गई।''

ह्न ह्न ह्न

इस कहानी के माध्यम से ब्रह्मचरीजी ने व्यंग्य करते हुए यह सिद्ध करना चाहा कि ये अध्यात्म की बातें करनेवाले इसीतरह कायरता की बातें करते रहेंगे, मुँह छुपा कर डरपोक बने सोते रहेंगे और लुटते रहेंगे।

ब्रह्मचारीजी के द्वारा अध्यात्म की हँसी उड़ानेवाले इस कटाक्ष भरे प्रवचन को सुनकर पास में बैठे अध्यात्मरसिक स्थानीय पण्डितजी से नहीं रहा गया। अत: उन्होंने अंत में बोलने की अनुमति लेकर कहा ह्न

''ब्रह्मचारीजी ! आपने उदाहरण तो बहुत अच्छा दिया, पर इसमें आप इतना अंश और जोड़ लें कि ह्न ''धन की लोभी पत्नी को चोर धन ले जाते तो दिखा, पर उसे उस चोर की कमर पर लटकती कटार नहीं दिखी, जो कि उसके पति को दिख रही थी। सेठ यह भी जानता था कि ह्न चोर को रोकना–टोकना तो बहुत दूर, यदि चोर को यह भी पता लग जाता कि ह्न 'सेठ–सेठानी ने मुझे देख लिया है' तो वह माल के साथ हम दोनों की जान भी ले जाता, पुलिस कार्यवाही के लिए वह हमें जिन्दा ही नहीं छोड़ता।''

यदि ब्रह्मचारीजी ! इतना अंश अपने उदाहरण में और जोड़ दो तो उदाहरण बेजोड़ हो जाय।

ह्न ह्न ह्न

सेठ ने शास्त्र में यह भी पढ़ा था कि ह्न '' पैसे का आना–जाना तो पुण्य–पाप के उदय का खेल है। पुण्योदय होने पर छप्पर फाड़कर चला आता है और पापोदय होने पर तिजोड़ी तोड़ कर चला जाता है।'' अत: उसने सोचा ह्न ''पैसों के पीछे प्राणों को जोखिम में डालना समझदारी का काम नहीं है।''

सेठ ने सेठानी को समझाया कि ह्न ''पैसा तो उस कुँए के पानी की भांति है, जिस कुँए की झिर चालू है। कृषक उस कुँए से दिन भर चरस चलाकर सम्पूर्ण पानी को खेतों में सींच कर कुँआ खाली कर देता है। वह खाली कुँआ प्रतिदिन प्रात: फिर उतना ही भर जाता है, कुँए की तरह तिजोड़ी को भी कोई कितनी भी खाली कर दे, यदि पुण्योदय की झिर खुली होगी तो वह तिजोरी भी पुन: भर जायेगी। तू चिन्ता क्यों करती है ? अपने भाग्य पर भरोसा रख और धर्माचरण में मन लगा, धर्माचरण धन आने का भी स्रोत है।''

पण्डितजी के इस पाँच मिनिट के उद्‌बोधन ने ब्रह्मचारीजी को अपने आध्यात्मिक अज्ञान का ज्ञान करा दिया। उन्होंने यह स्वीकार किया कि वस्तुत: एक–दूसरे द्रव्य का कर्ता–भोक्ता नहीं है; क्योंकि दो द्रव्यों के बीच अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवाल है। फिर क्या था ह्न ब्रह्मचारीजी ने संकल्प किया कि इन पण्डितजी के पास रहकर मुझे कुछ दिन पढ़ना चाहिए। अपने संकल्प के अनुसार उन्होंने चार माह तक पण्डितजी के आध्यात्मिक प्रवचन सुने और अंत में पण्डितजी का आभार मानते हुए बोले ह्न **''भैया हमें तो इन बातों की खबर ही नहीं थी।** अब हमारी समझ में आया कि आत्मा का धर्म तो सचमुच मात्र **''जानना–देखना''** ही है तथा एक जीव दूसरे का भला–बुरा करने लगे तो उसके पुण्य–पाप का क्या होगा।' कहा भी है ह्न

स्वयं किए जो कर्म शुभाशुभ फल निश्चय ही वे देते।
करे आप फल देय अन्य तो स्वयं किए निष्फल होते।। ●

बालक और पालक

ह्न पं. रतनचन्द भारिल्ल

एक नन्हा–मुन्हा छोटा सा बालक,
जिसका सब कुछ होता है उसका पालक।
वह बालक पालक पर पूरी निष्ठा से भरोसा करता है,
पालक जो भी करता उसे मन में बिठा लेता है।
बालक की छोटी–छोटी दो आँखें,
दिन–रात देखती हैं, पालक के कारनामे।
पालक जो भी करते हैं आचरण,
उसी ओर चल पड़ते हैं बालक के चरण।
उसके छोटे–छोटे दो कान
आपके कहे हर शब्द भर लेते हैं,
टेप–रिकॉर्डर की तरह अपने अन्दर।
क्योंकि नकल करने में
बालक होते हैं पूरे बन्दर।
उसके छोटे–छोटे दो हाथ
तत्पर रहते हैं देने आपका साथ।
और रहते हैं उतावले प्रतिपल
करने को आपका काम निश–दिन।
आप ही हैं उसके आदर्श
वह पाना चाहता है आपसे हर परामर्श।
अत: सन्मार्ग पर चलना है आपका दायित्व
ताकि निभा सकें आप बालक का उत्तरदायित्व।

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें लगभग 162 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 497 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 54 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राज. संस्कृत वि.वि.की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवी) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून 2008 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना–पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **मंगलायतन–अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) में 18 मई से 4 जून, 2008 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक (18 दिन) रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

– अलीगढ़ का पता –
तीर्थधाम मंगलायतन,
अलीगढ़–आगरामार्ग,
सासनी–204216 (उ.प्र.)
मो.09997996346, 9897234019

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्राचार्य
श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय,
ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
फोन : 0141–2705581, 2707458

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1.श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 31 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।

2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।

3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।

4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ–साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।

5.जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ–साथ अपने परिवार–समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।

6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।

7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करते हैं।

9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।

10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।

11. छात्रों की वक्तृत्व शैली, तर्क शैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व–पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 18 मई से 4 जून 2008 तक मंगलायतन–अलीगढ़(उ.प्र.)** में आयोजित शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **ह्न पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15, फोन–0141–2705581, 2707458

श्री टोडरमल महाविद्यालय की प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा दिनांक 23 जनवरी 2008 से 31 जनवरी 2008 तक विभिन्न आध्यात्मिक एवं खेल–कूद प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

जिसमें **अन्ताक्षरी प्रतियोगिता** में रजत जैन भिण्ड व दीपक जैन भिण्ड ने प्रथम तथा राहुल जैन दमोह व जयेश जैन उदयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के निर्णायक पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री थे । संचालन सुमत जैन व सी. बाबू जैन ने किया।

'**धर्म से सुख या विज्ञान से ?**' विषय पर आयोजित **उपाध्याय वर्ग की वाद–विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से कु. प्रतीति पाटील जयपुर ने प्रथम व जयेश जैन उदयपुर ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से एकत्व जैन खनियांधाना ने प्रथम व वीरेन्द्र जैन बक्स्वाहा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसकी अध्यक्षता श्री ताराचंदजी सौगानी ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित भागचंदजी शास्त्री मंचासीन थे। संचालन संतोष जैन एवं रमेश जैन ने किया।

'**ईश्वर सृष्टि कर्त्ता है या नहीं ?**' विषय पर आयोजित **शास्त्री वर्ग** की **वाद–विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से कु. परिणति पाटील जयपुर ने प्रथम व सुधीर जैन अमरमऊ ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से रमेश जैन ने प्रथम व अजय जैन पीसांगन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री शांतिलालजी जैन अलवर ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री सुदर्शनजी जैन वाराणसी तथा निर्णायक के रूप में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित संजयजी सेठी मंचासीन थे। संचालन कीर्तिकुमार पाटील व कु. परिणति पाटील ने किया।

ध्रुववाणी प्रतियोगिता (वॉइस ऑफ स्मारक) में प्रथम विवेक जैन दलपतपुर, द्वितीय कु. श्रुति जैन दिल्ली एवं तृतीय कु. परिणति पाटील चुने गये। प्रतियोगिता की अध्यक्षता विदुशी राजकुमारीबेन ने की। निर्णायक श्रीमती शशी तोतूका एवं श्रीमती वंदना जैन थीं। संचालन अविनाश पाटील व रविन्द्र महाजन ने किया।

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में **उपाध्याय वर्ग** से जयेश जैन उदयपुर ने प्रथम व प्रतीति पाटील जयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन आदेश जैन व उमेश जैन ने किया। **शास्त्री वर्ग** से गजेन्द्र जैन भिण्डर एवं अजय जैन पीसांगन ने प्रथम तथा संतोष जैन बक्स्वाहा एवं विवेक जैन दलपतपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन मिलिंद जैन व अचल जैन ने किया।

अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्रतीति जैन, द्वितीय स्थान श्रुति जैन एवं रमेश जैन ने प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में श्री प्रकाशजी, श्री संजयजी सारस्वत एवं श्री आशीषजी मंचासीन थे। संचालन प्रतीक जैन व अनेकान्त भारिल्ल ने किया।

श्लोक पाठ प्रतियोगिता में संयम जैन कोल्हापुर ने प्रथम एवं नितेश जैन आरोन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में श्री सतीशकपूरजी, श्री संजयजी एवं शुद्धात्मप्रकाशजी जैन मंचासीन थे। संचालन अभिजीत जैन एवं प्रसन्न जैन ने किया।

काव्य पाठ प्रतियोगिता में **शास्त्री वर्ग** से संतोष जैन बकस्वाहा ने प्रथम एवं तन्मय जैन खनियांधाना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षता श्री कैलाशजी सेठी ने की। निर्णायक के रूप में श्री श्रेयांसजी एवं श्री सुदेशजी मंचासीन थे। संचालन वीरचन्द जैन ने किया।

वर्तमान पीढी में जैन संस्कारों का बीजारोपण विषयक **निबन्ध प्रतियोगिता** में तपिश जैन उदयपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संयोजन प्रदीप जैन ने किया।

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो, बॉलीबॉल, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, दौड आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन विद्यार्थियों के लिए किया गया।

सभी प्रतियोगिताएँ शास्त्री तृतीय वर्ष के संयोजकत्व में सम्पन्न हुई।

सदा ऋणी रहेंगे !

लाल बहादुर शास्त्री, संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली से डॉ. अनेकान्तजी जैन लिखते हैं कि ह्न

''प्रात: 6.20 बजे टी.वी. में साधना चैनल पर आपके (डॉ.भारिल्ल) प्रवचन सुनकर ऐसा लगता है कि मानो साक्षात् स्मारक भवन में बैठकर आपकी वाणी सुन रहे हों। प्रसारण की समयावधि कम होने से प्राय: जबतक प्रकरण अपनी पूरी ऊँचाई पर आ पाता है, तभी प्रवचन समाप्त हो जाते हैं; फिर भी आपके प्रत्यक्ष सान्निध्यवत् लाभ मिलता है। अन्यन्य व्यस्तताओं के चलते स्मारक आकर आपके प्रवचन सुनने का अवसर तो नहीं मिल पाता है; किन्तु इस माध्यम से यह अभाव उतना अखरता नहीं है।

वर्तमान में चारों ओर आपका एक विशाल शिष्य समुदाय सभी संस्थाओं तथा अधिकांश विभागों की बागडोर संभाले हुये है। इस दृष्टि से आपने एक युग का निर्माण किया है। हम सभी इसके लिये आपके सदा ऋणी रहेंगे।''

धर्म प्रभावना

दिनांक 8 से 10 फरवरी तक श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर की ओर से **श्रवणबेलगोला** की त्रि–दिवसीय ससंघ तीर्थयात्रा के अवसर पर प्रवचन, तत्त्वचर्चा, पूजन–भक्ति एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का सुन्दर आयोजन किया गया।

इस अवसर पर भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी के मंगल प्रवचन के अतिरिक्त संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही श्री कैलाशचन्दजी सेठी एवं श्री प्रकाशचन्दजी सेठी के तत्त्वज्ञान की रुचि जाग्रत करने हेतु मार्मिक उद्बोधनों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम श्री योगेशजी टोडरका के कुशल निर्देशन में अजयजी गोधा, संजयजी, अमितजी, विवेकजी एवं अभिषेकजी के सहयोग से सम्पन्न हुये।

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 22

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

मुनिराज उद्दिष्ट आहार के त्यागी होते हैं। उनकी वृत्ति को मधुकरी वृत्ति कहा गया है। जिसप्रकार भौंरा या मधुमक्खी जिन फूलों से मधु ग्रहण करती है, रस ग्रहण करती है; वह उसे रंचमात्र भी क्षति न हो जावे ह्न इस बात का ध्यान रखती है। वे पुष्प का रस लेते समय इतना ध्यान रखते हैं कि उस पर अपना वजन भी नहीं डालते, भिनभिनाते रहते हैं, उड़ते रहते हैं और अत्यन्त बारीक अपने डंक से इसप्रकार रस चूसते हैं कि पुष्प का आकार भी नहीं बिगड़ता, वह एकदम जैसा का तैसा बना रहता है। उसीप्रकार मुनिराज भी, जिसके यहाँ आहार लेते हैं, उसे किसी भी प्रकार की पीड़ा पहुँचे, ऐसा नहीं होने देते। अत: उनके उद्देश्य से बनाये गये आहार को ग्रहण नहीं करते। गृहस्थ ने जो आहार स्वयं के लिये बनाया, उसमें से ही वह मुनिराज के लिये देवे, वही ग्रहण करते हैं। मुनिराजों के उद्देश्य से बनाये गये आहार में जो आरंभी हिंसा होती है, उसका भागी मुनिराज को बनना होगा; इसकारण मुनिराज नहीं चाहते कि कोई उनके उद्देश्य से आहार बनावे। यही कारण है कि वे उद्दिष्ट आहार के त्यागी होते हैं।''

इसके बाद मुनिराजों की वृत्ति और प्रवृत्ति का चित्रण इसप्रकार किया गया है ह्न

अरि–मित्र महल–मसान, कंचन–कांच निंदन–थुतिकरन।
अर्घावतारन असि–प्रहारन में, सदा समता धरन।।

मुनिराजों की वृत्ति और प्रवृत्ति प्रत्येक परिस्थिति में समताभावरूप ही रहती है। वे मुनिराज शत्रु के साथ द्वेष और मित्र के साथ राग नहीं करते, महल में राग और मसान (मरघट) में द्वेष नहीं रखते, कंचन और काँच में भी भेद नहीं रखते। इसीप्रकार भगवान समझकर अर्घ्य चढ़ानेवाले और शत्रु समझकर तलवार का प्रहार करनेवालों पर भी राग–द्वेष नहीं रखते, साम्यभाव ही रखते हैं।

न केवल यही, मुनिराजों की और भी अनेक विशेषतायें होती हैं; जिनमें कुछ इसप्रकार हैं ह्न

तप तपैं द्वादश, धरैं वृष दश, रतनत्रय सेवैं सदा।
मुनि साथ में वा एक विचरैं, चहैं नहिं भव–सुख कदा।।
यों है सकल संयम चरित, सुनिये स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि, मिटै पर की प्रवृत्ति सब।।

वे मुनिराज अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन और कायक्लेश ह्न ये ६ बाह्य तप और प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान ह्न ये ६ अंतरंग तप ह्न इसप्रकार कुल मिलाकर १२ तपों को तपते हैं।

उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य ह्न इन १० धर्मों को धारण करते हैं और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यक्चारित्र का सेवन करते हैं।

यदि १० धर्मों और १२ तपों के बारे में विशेष जानने की इच्छा हो तो लेखक की अन्य कृति **'धर्म के दशलक्षण'** का स्वाध्याय करना चाहिये; क्योंकि उसमें १० धर्मों की चर्चा तो बहुत विस्तार से लगभग २०० पृष्ठों में है ही; साथ में उत्तम तपधर्म के सन्दर्भ में १२ तपों की चर्चा भी १९ पृष्ठों में है।

वे मुनिराज या तो मुनिसंघ में रहते हैं या अकेले ही विहार करते रहते हैं और संसार के सुखों को वे कभी भी नहीं चाहते।

इसप्रकार यह सकलसंयम चारित्र है और अब स्वरूपाचरण चारित्र के संबंध में चर्चा करते हैं। हे भव्यजीवो ! तुम उसे ध्यान से सुनो; क्योंकि उसके होने पर अपनी निधि प्रगट हो जाती है और परसंबंधी समस्त प्रवृत्तियाँ मिट जाती हैं, विलय को प्राप्त हो जाती हैं।

इसप्रकार छठवीं ढाल के पूर्वार्द्ध में समागत सकलचारित्र की चर्चा से विराम लेते हैं। अब स्वरूपाचरण चारित्र की चर्चा करेंगे। ●

सातवाँ प्रवचन

छहढाला की छठवीं ढाल में प्रतिपादित मुनिधर्म के स्वरूप की चर्चा चल रही है। उसमें सकल संयम की बात हुई; अब स्वरूपाचरण चारित्र की बात आरंभ करते हैं।

यदि अपने स्वरूप में आचरण का नाम ही स्वरूपाचरण है तो फिर सबसे पहले अपने स्वरूप को समझना होगा।

भगवान आत्मा का वास्तविक स्वरूप पर से भिन्न, पर्याय से भिन्न और गुणभेद से भी भिन्न, अभेद अखण्ड ज्ञानानन्द स्वभाव ही है। इसलिये उसे जानकर, उसमें ही अपनापन स्थापित कर, उसमें ही जम जाना, रम जाना, समा जाना स्वरूपाचरण चारित्र है।

यद्यपि स्वरूपाचरण चौथे गुणस्थान से ही आरंभ हो जाता है; तथापि यहाँ प्रसंग मुनिधर्म का है; इसलिये यहाँ सकल संयम के साथ रहनेवाले स्वरूपाचरण की ही बात करते हैं।

सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञानपूर्वक अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषाय चौकड़ी के चले जाने से जो निर्मल परिणति उत्पन्न होती है; उसे मुनिराजों की शुद्ध परिणति कहते हैं और उक्त शुद्ध परिणतिपूर्वक जब उपयोग भी अन्तर्मुख होता है तो उसे शुद्धोपयोग कहते हैं।

इसप्रकार जब परिणति और उपयोग दोनों ही शुद्ध होते हैं; तब जो स्थिति बनती है, उस स्थिति का नाम ही स्वरूपाचरण चारित्र है। वह सातवें गुणस्थान में और उसके आगे होता है। किन्तु जब उपयोग बहिर्मुख हो जाता है, पर तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप शुद्धता कायम रहती है; उस समय जिसप्रकार के शुभभाव और शुभाचरण होता है; उस

शुद्धात्मपरिणति के साथ होनेवाले उन शुभभावों और उस शुभाचरण का नाम व्यवहारचारित्र या सकलसंयम है।

बाह्य में २८ मूलगुणों के पालने की भावनारूप शुभभाव और २८ मूलगुणों के पालनरूप आचरण व्यवहारचारित्र है और इसी समय जो तीन कषाय के अभावरूप निर्मल परिणति है; उसमें भी उन मूलगुणों को निश्चय से घटित किया जा सकता है।

स्वरूपाचरण की महिमा बताते हुये विगत छन्द में कहा था कि ह्न

जिस होत प्रगटे आपनी निधि, मिटे पर की प्रवृत्ति सब।

पर के लक्ष्य से अपने में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति ही परप्रवृत्ति है और अपना आत्मस्वभाव ही अपनी निधि है। स्वरूपाचरणचारित्र के होने पर पर के लक्ष्य से अपने में होनेवाली परप्रवृत्ति नष्ट हो जाती है और आत्मस्वभाव प्रगट हो जाता है।

तात्पर्य यह है कि अपनी निधि तो अपने में ही है; उसे कहीं बाहर से नहीं लाना है। उसे लाना नहीं है, प्रगट करना है। उस आत्मस्वभाव रूप निधि को जानना ही उस निधि को पाना है, प्रगट करना है।

उक्त स्वरूपाचरण चारित्र से ही परप्रवृत्ति मिटकर अपने आत्म–स्वभाव को जाननेरूप निधि प्रगट हो जाती है। इसप्रकार पर से निवृत्ति और स्व में प्रवृत्ति ही स्वरूपाचरण चारित्र है।

जिस स्वरूपाचरण चारित्र के होने पर पर की प्रवृत्ति मिट जाती है और अपनी निधि प्रगट हो जाती है; अब उस शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरण चारित्र की बात करते हैं ह्न

जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अन्तर भेदिया।
वरणादि अरु रागादि तैं, निज भाव को न्यारा किया।।
निज माहिं निज के हेतु, निज कर आपको आपै गह्यौ।
गुण–गुणी ज्ञाता–ज्ञान–ज्ञेय, मँझार कछु भेद न रह्यौ।।
जहँ ध्यान–ध्याता–ध्येय को, न विकल्प वच–भेद न जहाँ।
चिद्भाव कर्म चिदेश कर्ता, चेतना किरिया तहाँ।।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध, उपयोग की निश्चल दसा।
प्रगटी जहाँ दृग–ज्ञान–व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।
परमाण–नय–निक्षेप को, न उद्योत अनुभव में दिखै।
दृग–ज्ञान–सुख बलमय सदा, नहिं आन भाव जु मो विषै।।
मैं साध्य–साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनि तैं।
चिप्पिण्ड चण्ड अखण्ड सुगुणकरण्ड, च्युति पुनि कलनितैं।।

जिन्होंने अत्यन्त तीक्ष्ण सुबुद्धिरूपी छैनी को अन्तर में डालकर वर्णादि परपदार्थों और रागादि विकारी भावों को भेद कर इनसे निज भगवान आत्मा को न्यारा किया अर्थात् न्यारा जानकर अपने में ही, अपने लिये, अपने द्वारा, अपने को, अपने आप ग्रहण कर लिया; तब गुण–गुणी में तथा ज्ञाता–ज्ञान–ज्ञेय में कुछ भी अन्तर नहीं रहा।

उस स्वरूपाचरण चारित्र अर्थात् शुद्धोपयोग की निश्चल दशा में ध्यान, ध्याता और ध्येय का भेदरूप विकल्प नहीं रहता, वचन का विकल्प भी नहीं रहता। वहाँ कर्त्ता, कर्म और क्रिया का भेद भी नहीं रहता; क्योंकि चिद्भाव ही कर्म है, चिदेश कर्ता है और चेतना क्रिया है ह्न इसप्रकार ये तीनों अभिन्न हैं, अखिन्न हैं अर्थात् खेद से रहित हैं।

शुद्धोपयोग में ज्ञान–दर्शन–चारित्र की ऐसी दशा प्रगट हुई कि जिसमें ये दर्शन, ज्ञान और चारित्र तीन होकर भी एकरूप में ही शोभायमान हो रहे हैं; अनेकाकार न होकर एकाकार हो रहे हैं।

अनुभव अर्थात् शुद्धोपयोग के काल में प्रमाण, नय और निक्षेपों का उद्योत भी नहीं होता। अनुभव में तो ऐसा भासित होता है कि मैं तो सदा ही दर्शन, ज्ञान, सुख और वीर्यमय हूँ और अन्य कोई भाव मुझ में नहीं है। मैं ही साध्य हूँ, मैं ही साधक हूँ और मैं कर्म और उसके फलों से अबाधक हूँ; प्रचण्ड चैतन्य का पिण्ड हूँ, अखण्ड हूँ और सुगुणों का करण्ड (पिटारा) हूँ और पर्यायों में होनेवाले उतार–चढ़ाव से रहित हूँ।

जिसप्रकार चन्द्रमा में सोलह कलायें होती हैं; वह प्रतिदिन घटता–बढ़ता रहता है, एक–सा नहीं रहता। यही स्थिति संसार अवस्था में पर्यायों की है; वे कभी भी एक–सी नहीं रहती; परन्तु दृष्टि का विषयभूत यह भगवान आत्मा उन पर्यायों के उतार–चढ़ाव से रहित है।

यदि परप्रवृत्ति से निवृत्ति और स्वरूप में प्रवृत्ति ही स्वरूपाचरण है तो इसे प्राप्त करने के लिये स्व और पर के बीच भेदविज्ञान करना अत्यन्त आवश्यक है; क्योंकि स्व और पर के बीच की सीमारेखा जाने बिना पर से निवृत्त होना और स्व में प्रवृत्त होना संभव नहीं है।

इसलिये यहाँ कहा गया है कि वर्णादि अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्शवाले देहादि पौद्गलिक पदार्थों और परलक्ष्य से अपने आत्मा में उत्पन्न होनेवाले मोह–राग–द्वेषरूप भावों से निजभाव अर्थात् ज्ञानानन्द स्वभावी निजात्मा को अपनी तीक्ष्ण प्रज्ञा से भिन्न पहिचान लिया है, भिन्न जान लिया है।

समयसार कलश–३७ में भी कहा है ह्न

वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा भिन्ना भावाः सर्व एवास्य पुंसः।

वर्णादि और रागादिरूप सभी भाव (पदार्थ) भगवान आत्मा से भिन्न ही हैं।

समयसार परमागम के जीवाजीवाधिकार में वर्णादि में २० प्रकार के पदार्थ लिये हैं और रागादि भाव में ९ प्रकार के विकारी भाव लिये हैं। पर और पर्याय से भिन्न भगवान आत्मा उक्त २९ प्रकार के भावों से भिन्न है। यही भगवान आत्मा दृष्टि का विषय है, परमशुद्ध निश्चयनयरूप ज्ञान का ज्ञेय है और ध्यान का ध्येय है। इसी भगवान आत्मा के दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन, इसे जानने का नाम सम्यग्ज्ञान और इसमें ही जमने–रमने का नाम सम्यक्चारित्र है।

आत्मा ने यह कार्य न तो दूसरों से कराया है और न दूसरों के सहयोग से किया है; अपितु पर से भिन्न अपने आत्मा को, अपने लिये, अपने में, अपने द्वारा स्वयं ही ग्रहण किया है अर्थात् जान लिया है। यह जान लिया है कि यह ज्ञानानन्द स्वभावी आत्मा मैं ही हूँ। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

आदि मंचासीन थे। सभा की अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री कपूरचन्दजी घुवारा ने की। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने किया।

विचार गोष्ठी का आयोजन ह्न

ज्ञान कल्याणक के अवसर पर रात्रि में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्र विद्वानों द्वारा क्रमबद्धपर्याय : एक अनुशीलन विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री विमलजी जैन नीरु कैमिकल्स ने की। मुख्यअतिथि श्री कमलजी पाटनी एवं श्री अशोकजी पाटनी कोलकाता थे। गोष्ठी में विवेक जैन दलपतपुर, सुधीर जैन अमरमऊ, विवेक जैन सागर, अनेकान्त भारिल्ल मुम्बई एवं संतोष जैन बकस्वाहा ने अपने विचार व्यक्त किये।

संचालन चैतन्यप्रकाश बकस्वाहा एवं मंगलाचरण दीपेश शास्त्री अमरमऊ ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री जयपुर ने किया।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूरे देश से हजारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से ७९ हजार ५७२ रुपये का सत्साहित्य एवं ५७ हजार ३१२ घण्टों के डी.वी.डी. एवं सी.डी कैसिट्स घर-घर पहुँचे। •

जिलास्तर पर सम्मानित

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ कुशलबाग मैदान में आयोजित सम्मान समारोह में श्री रितेश जैन प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.संस्कृत वि. नई दिल्ली लोधा को प्रशस्ति पदक एवं प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

आपको यह सम्मान संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, वृक्षारोपण कार्य एवं नैतिक संस्कार शिविरों के आयोजन हेतु प्रदान किया गया।

समारोह जिला कलेक्टर विकास सीताराम भाले की अध्यक्षता एवं श्री भवानी जोशी-चिकित्सा एवं स्वा.राज्यमंत्री के मुख्यातिथ्य में हुआ।

श्री जैन वर्तमान में रा.उ.मा.वि.रैयाना में प्राध्यापक पद पर कार्यरत हैं।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

वैराग्य समाचार

1.औरंगाबाद (महा.) निवासी श्री कल्याणमल हजारीलालजी गंगवाल का दिनांक 10 दिसम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आप अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र सर्वेक्षण कमेटी के सम्मानित सदस्य थे इसके साथ ही आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से भी जुड़े रहे तथा दशलक्षण पर्व पर भी आपका योगदान ट्रस्ट को मिलता रहा।

ज्ञातव्य है कि आप पिछले 1 साल से अस्वस्थ थे। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 501 रुपये प्राप्त हुये हैं।

2.बेंगू (राज.) निवासी श्रीमती केशरबाई टोंग्या धर्मपत्नी श्री कैलाशचंदजी टोंग्या का दिनांक 27 नवम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 2100/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण प्राप्त करें ह्न यही भावना है।

साधना चैनल पर प्रवचन देखना एवं सुनना न भूलें

प्रतिदिन रात्रि 8.20 बजे से

आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

एवं

प्रतिदिन प्रात: 6.20 बजे से

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७